अंक ०४ सितम्बर,२०२० भाद्रपद मास विक्रम संवत २०७७

मानव भारती- विद्यालयस्य प्रयासः

आत्मानं विद्धि

"ज्योतिर्गमय"

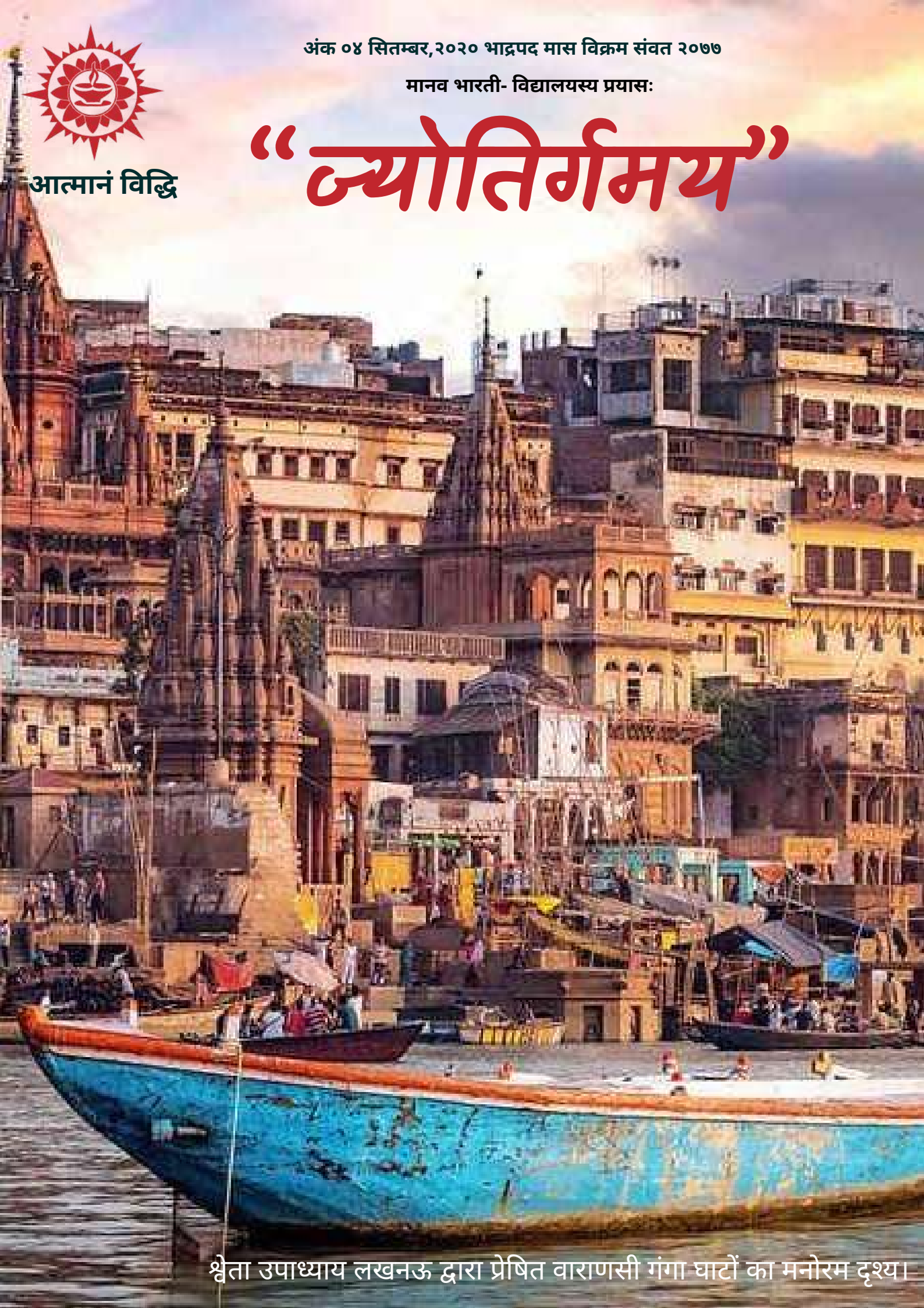

श्वेता उपाध्याय लखनऊ द्वारा प्रेषित वाराणसी गंगा घाटों का मनोरम दृश्य।

संपादकीयः गंगा को बचाने का मतलब है स्वयं को बचाना

गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारि शिरश्चारि पापहारि पुनातु माम्॥ -महर्षि वाल्मीकि

जिज्ञासु पाठकों, मित्रों तथा आत्मीयतापूर्ण विद्यार्थियों! ज्योतिर्गमय मासिक पत्रिका का चतुर्थ अंक लोकार्पित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है।अच्छी बात है कि हम सभी ज्ञान प्रवाह के इस नैतिक मूल्यों में अनवरत आगे बढ़ रहे हैं।आप सभी के सहयोग से ही यह कार्य सभ्मव है। अतः आप सभी को सादर नमन करता हूं।

मित्रों! जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि यह अंक भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक मां गंगा को समर्पित है अतएव यह नमामि गंगे! अंक है। गंगा बचेगी तभी भारत और हम सभी बचेंगे। प्यारे बच्चों! नमामि गंगे ! केंद्र सरकार द्वारा गंगा की सफाई और सौंदर्यकरण की एक पुनरुत्थान परियोजना है। सरकार ने गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने के लिए नमामि गंगे!नामक एक एकीकृत गंगा संरक्षण मिशन का शुभारंभ जुलाई २०१४ में किया है। परियोजना की अवधि १८साल है लागत २०३७ करोड़ रुपए रखी गई है।यह परियोजना केंद्रीय जल संसाधन मंत्रालय, नदी विकास और गंगा कायाकल्प के साथ सृजित है। नमामि गंगे! अर्थात् गंगा को नमन,प्रणाम।

भारतीय जनमानस के मन- प्राण में बसी हुई गंगा एक मां की तरह हमारे सभी कष्ट हर लेती है। यदि हम अपनी गौरवमई सभ्यता, संस्कृति को बचाना चाहते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति को इस जीवन दायिनी नदी को स्वच्छ, सुरक्षित और संरक्षित करने का प्रयास करना होगा।आप सभी को पता होना चाहिए कि सरस्वती नदी के सूखते ही राजस्थान मरुभूमि में बदल गया। गंगा के सूखते ही भारतवर्ष मरुभूमि में बदल जाएगा। सरस्वती के सूखते ही ऋषि उत्पत्ति बंद हो गई। गंगा के सूखते ही महात्मा और संत परंपरा समाप्त हो जाएगी। सरस्वती नदी के समाप्त होते ही काली -बंगा नगर समाप्त हो गया। गंगा के लुप्त होते ही देवप्रयाग, ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयागराज, काशी एवं गंगासागर जैसे भारतीय ऐतिहासिक तीर्थ समाप्त हो जाएंगे। पृथ्वी पर नदियों की दूरी,ढलान और चौड़ाई प्राकृतिक है मनुष्य ने बांध बनाकर नदियों को समुद्र से मिलने से रोक दिया। इसके भयावह भू-भौतिक दुष्परिणाम हो सकते हैं। मां गंगा को टिहरी में बांधकर रोक दिया गया है। गोमुख से लेकर गंगा सागर तक की यात्रा बंद कर दी गई है। मां गंगा को रोकना धर्म, संस्कृति, सभ्यता, जीवन और मर्यादा को रोकना है।
गंगा का अविरल और अविच्छिन्न प्रवाह भारत की आत्मा को स्नान कराता है। गंगा के बिना भारतवर्ष जीते जी मर जाएगा। गंगा के बिना पूजा, पाठ, संकल्प, अभिषेक,श्राद्ध,मोक्ष, महाकुंभ (हरिद्वार और प्रयागराज) साधना,जप-तप,ग्रहण -स्नान के साथ ही भारतीय जीवन पद्धति को भयावह क्षति पहुंचेगी।। अतः हर हाल में गंगा को मुक्त करना ही होगा।"सरस्वती तु पंचधासो देशेऽभवत् सरित्"इस वेदमंत्र के अनुसार सरस्वती नदी को पांच खंडों में बहने के लिए बाध्य किया गया था। आज़ मां गंगा को दर्जनों बांधों में बांधकर झीलों में बदल दिया गया है। परिणाम क्या होगा इसकी कल्पना की जा सकती है। प्रदूषण,गंदे नाले का विषैला जल प्रवाह गंगा को किस तरह प्रभावित कर रहा है हम सभी इससे अनभिज्ञ नहीं हैं।

हम सभी का सामाजिक कर्तव्य है कि गंगा को प्रदूषण मुक्त करने में सहयोग करें। अन्यथा परिणाम अपने समय पर दुष्परिणाम के रूप में मिलना निश्चित है। यदि हम सभी के संकल्प उत्तम हों और एकता के साथ सामूहिक क्रियाशीलता हो तो मां गंगा को बचाया जा सकता है। गंगा को बचाने का मतलब है स्वयं को बचाना, भारतीय संस्कृति और आकर्षक विरासत को बचाना। आइए हम सभी विचार करें कि इस दिशा में हम क्या कर सकते हैं और करने का प्रयास करें।

भगवति तव तीरे नीरमात्रा - शनोऽहम्
विगतविषयतृष्णःकृष्णमाराधयामि ।
सकल कलुषभंगे स्वर्गसोपानसंगे
तरल - तरतरंगे देवि गंगे प्रसीद ॥

गंगा-स्तोत्रम्

देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे !
त्रिभुवन -तारिणि- तरलतरंगे ।
शंकर -मौलि -विहारिणि -विमले
मम मतिरास्तां तव पदकमले॥
-श्री शंकराचार्य

हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती,नर्मदा, सिंधु, और कावेरी आप सभी इस जल में उपस्थित हों। (स्नान से पहले यह श्लोक अवश्य ही पढ़ें, यह हमारी परम्परा रही है)।

गतिमान बनें

योजनानां सहस्रं तु शनैर्गच्छेत् पिपीलिका।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति॥

अर्थात् जीवन में हमेशा खुश गतिमान रहना चाहिए,गतिविहीन जीवन का परिणाम कभी मंगलकारी नहीं होता। जैसे नन्हीं चींटी निरन्तर चलकर धीरे -धीरे अपनी हजार योजन की यात्रा भी पूरी कर सकती है परन्तु गरूड़ जगह से न हिले तो वह एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता है। अतः मित्रों उद्यमी, परिश्रमी के साथ गतिमान बनें, यही शास्त्रों का निर्देश है।

क्या आप जानते हैं

टिहरी बांध टूटने के बाद क्या हो सकता है

१.बांध के टूटते ही कुछ ही देर में पूरी झील (४२किमी. लम्बी ८०० फीट ऊंची) खाली हो जाएगी। महाप्रलय का तांडव हो सकता है।
२.देवप्रयाग, ऋषिकेश, हरिद्वार, का अस्तित्व मिट सकता है।
३.पानी का रेला चलेगा, जिसमें पशु,पक्षी,जानवर और मनुष्य जल समाधि ले सकते हैं।
४.ऋषिकेश में २६०मीटर तथा हरिद्वार में २३२मीटर ऊंचा पानी का प्रलयंकर रूप हो सकता है।
५.गंगा सागर तक तटवर्ती क्षेत्र अकस्मात् विप्लव,जलप्लावन और अराजकता के शिकार हो सकते हैं।
६.एक भंयकर त्रासदी हो सकती है।आप विचार करें इसका जिम्मेदार कौन होगा?
-स्वाध्याय के आधार पर।

गंगा भारत की वैश्विक नदी

गंगा भारत की एक महानदी है। यह हिमालय के गोमुख से निकलती है। गंगा आर्यों की पवित्रतम नदी है। इसकी अनेक गाथाएं पुराणों में वर्णित हैं। गंगा का जल बहुत पवित्र माना जाता है।

गंगा का जल स्वास्थ्यकर भी होता है। गंगा हमारी संस्कृति है। विश्व के सभी देशों ने अपनी नदियों को बचाया है। विश्व में जितनी भी नदियां हैं उनमें से कोई भी गंगा जल की तरह अमृत जल वाली नहीं हैं। सभी के जल में कीड़े पड़ जाते हैं परन्तु गंगा जल में कभी भी कीड़े नहीं पड़ते।

गंगा वैश्विक नदी है। मोक्ष नदी है, इसे बचाना हमारा पवित्र कर्तव्य है। मां गंगा को मुक्त कराने के लिए, उनके अविरल-अविच्छिन्न प्रवाह को पाने के लिए हुंकार भरिए। यदि हम सभी लोग लग जाएंगे तो मां गंगा अवश्य मुक्त हो सकेंगी। मां गंगा हमें शक्ति प्रदान करें। मां गंगा मुक्त हों। यही नमामि गंगे! परियोजना की संकल्पना और सार्थकता है।

नमामि गंगे !

समीक्षा गहरवार, कक्षा-8 बी

स्नान हेतु श्लोक पाठ

गंगे च यमुने चैव
गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि
जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती,नर्मदा, सिंधु, और कावेरी आप सभी इस जल में उपस्थित हों।(स्नान करने से पहले यह श्लोक अवश्य ही पढ़ें,यह हमारी परम्परा रही है)।

सामान्य ज्ञान

1.गंगा का अन्य नाम- भागीरथी, जाह्नवी,नरकनिवारिणी,त्रिपथगा, मोक्षदायिनी ,तरलतरंगिणी इत्यादि।
2.नमामि गंगे! अर्थात् गंगा को सादर प्रणाम।
3.गंगा अवतरण दिवस-----गंगा दशहरा (ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष दशमी तिथि)
4.राष्ट्रीय नदी-गंगा
5.गंगा की कुल लंबाई -2525किलोमीटर।
6.गंगा के किनारे बसे महानगर -ऋषिकेश, हरिद्वार, कानपुर, प्रयागराज, वाराणसी, पटना, भागलपुर इत्यादि।
7.नमामि गंगे! क्या है?-केन्द्र सरकार द्वारा गंगा की सफाई और सौंदर्यीकरण की एक पुनरुत्थान परियोजना है। सरकार ने गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने के लिए नमामि गंगे!नामक एक एकीकृत गंगा संरक्षण मिशन का शुभारंभ किया है।
8.परियोजना प्रारंभ तिथि -जुलाई2014.
9.परियोजना की अवधि-- 18साल
10.परियोजना में शामिल मंत्रालय-केन्द्रीय जल संसाधन मंत्रालय, नदी विकास और गंगा कायाकल्प।
11.नमामि गंगे परियोजना की लागत-2037 करोड़ रुपये।
12.गंगा उद्गम स्थल -गोमुख, गंगोत्री
13.स्थल की उंचाई -3140 मीटर
14.श्री गंगा स्तोत्रम् के रचनाकार-श्रीशंकराचार्य
15.गंगाष्टकम् के लेखक-आदि कवि महर्षि वाल्मीकि
16.गंगा लहरी के रचनाकार-श्री पंडितराज जगन्नाथ
17.रक्षत गंगाम् ऐतिहासिक पुस्तक की लेखिका-डॉ.कमला पाण्डेया, वाराणसी
18.वोल्गा नदी-रूस की अस्मिता
19.टेम्स नदी-ब्रिटेन की प्रतिष्ठा
20नील नदी-मिस्र और सूडान की जीवन रेखा
21.मिसीसिपी मिसौरी नदी-उत्तरी अमेरिका की धड़कन
22.अमेजन नदी-दक्षिणी अमेरिका की पहचान है
23.मरे डार्लिंग नदी- आस्ट्रेलिया के जन-जन की प्रेयसी है।
24.डेन्यूब नदी-यूरोप की जीवन धारा है
25.गंगा नदी-भारत की आन बान शान और सांस्कृतिक प्रवाह की चेतना है।

-डॉ.अनन्तमणि त्रिवेदी मानव भारती-देहरादून

नैतिक शिक्षा की सूक्तियां

1.प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरश्चरितमात्मन:-महाभारत
प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन अपने चरित्र पर, आचरण पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।
2.यद् यदाचरति श्रेष्ठ: तत्तदेवेतरो जन:-श्रीमद्भगवद्गीता
समाज में श्रेष्ठ पुरुष जैसा-जैसाआचरण करते हैं वैसा ही आचरण सभी को करना चाहिए।
3.ब्राह्मे मुहुर्ते उत्तिष्ठेत्-अष्टांगसंग्रह
प्रात:काल ब्रह्म मुहुर्त में उठना चाहिए।
4.नित्यस्नायी स्यात्-विष्णुस्मृति
प्रतिदिन स्नान करना चाहिए।
5.न अनृतं ब्रूयात्-चरक संहिता
(अन्य ग्रंथों में भी उपलब्ध)झूठ नहीं बोलना चाहिए।
6.न अश्लीलं कीर्तयेत्-विष्णुस्मृति
अश्लील बातें नहीं करनी चाहिए।
7.न मध्ये पूज्ययोर्यायात्-अग्निपुराण
दो पूज्य-जनों के बीच होकर नहीं जाना चाहिए।
8.आरभेत् हि कर्माणि श्रान्त: श्रान्त: पुनः पुनः ईशावास्योपनिषद्
काम करने से बार--बार थक जाने पर भी बराबर नये नये काम करते रहना चाहिए।
9.व्यवसायी सदा च स्यात् -शुक्रनीति
किसी न किसी काम में बराबर लगे रहना चाहिए।
10.आपदर्थे धनं रक्षेत्-महाभारत (उद्योग पर्व) संकट के समय के लिए भी कुछ धन सुरक्षित रखना चाहिए।

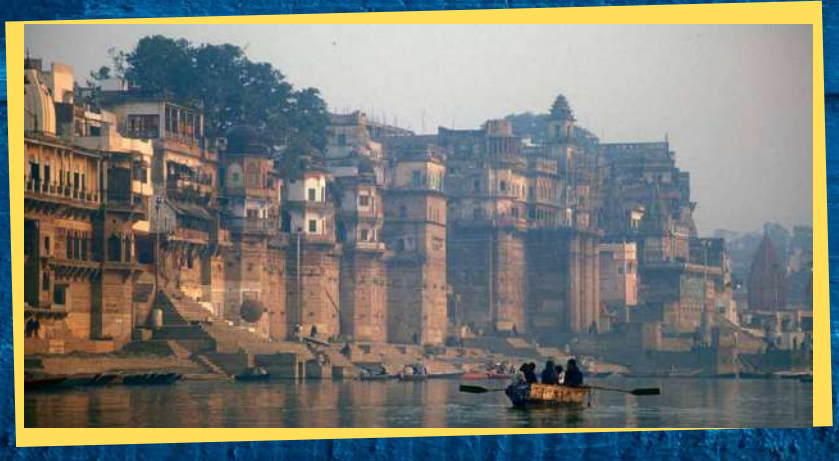

(कहानी गंगा की)

गंगा की करुणामयी धारा

गंगा शब्द का उच्चारण करते ही भारतीय जनता के हृदय में पवित्र भाव जग जाते हैं। गंगा नदी के साथ भारतीय संस्कृति का अटूट संबंध है।काव्य और साहित्य में भी गंगा का सुंदर चित्रण उपलब्ध होता है। गंगा, गीता और गायत्री ये तीन शब्द भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं। गंगा की उत्पत्ति की कहानी भी बहुत चित्ताकर्षक है। पौराणिक दृष्टि से सिद्ध होता है कि गंगा को समतल भूमि पर प्रवाहित कराने में भगीरथ का अनुपम त्याग है। यही कारण है कि गंगा का दूसरा नाम भागीरथी भी है। पुराणों के अनुसार विष्णु भगवान के चरण कमलों के नख से निकली हुई सुधा धारा के रूप में भी लोग गंगा को जानते हैं। शंकर की जटाओं से भी गंगा की उत्पत्ति मानी गई है। ब्रह्मा के कंमडंल से भी गंगा के प्रवाहित होने की बात कही जाती है ।

भौगोलिकों की मान्यता है कि यह एक बर्फीली नदी है, जो गंगोत्री से निकलकर समतल जमीन पर अनवरत बहती है। अपने उद्गम-बिंदु पर गंगा की धारा बहुत तेज है, परन्तु समतल भूमि पर प्रवाहित होने से वह शांत हो जाती है।इस प्रकार गंगा की उत्पत्ति के पीछे भौगोलिक कारण तो है ही, साथ ही एक महान व्रती व्यक्ति के दुर्लभ त्याग का भी हाथ है। गंगा प्रयाग में यमुना और सरस्वती से मिलकर और भी महत्वपूर्ण बन जाती है।

गंगा के किनारे ऋषिकेश, हरिद्वार, कानपुर, प्रयागराज, काशी, बक्सर,पटना, मुंगेर, भागलपुर इत्यादि विख्यात शहर बसे हुए हैं। ये सभी व्यापार के प्रमुख केन्द्र हैं।सदियों से गंगा अपने साथ उपजाऊ मिट्टी बहाकर लाती है और बाढ़ के समय अगल -बगल के खेतों में उसे डालकर जमीन से सोना उगलवाती है।

वैज्ञानिक भी जांच करके कह चुके हैं कि गंगा -जल में चिर काल तक कीड़े नहीं पड़ते। गेहूं,धान,जौ आदि फसलें गंगा के मिट्टी का संयोग पाते ही बालियों से लदकर झूमने लगते हैं। गंगा जल में स्वास्थ्य प्रदान करने की भी अपार संभावनाएं और शक्ति है। भारत में कोटि-कोटि मानव पुण्य -प्राप्ति की कामना से महीने भर गंगा या गंगा तट का सेवन करते हैं। गंगा की उत्पत्ति और पवित्रता पर हम सभी को गर्व होना चाहिए। हिमालय की चोटियों से फूटकर बहने वाली इस करुणामयी धारा को भारतवासी सदा श्रद्धा की दृष्टि से ही देखते हैं और देखते रहेंगे।

आइए हम सभी संकल्प लें कि नमामि गंगे! इस परियोजना का सहयोग करते हुए गंगा की सफाई पर विशेष ध्यान देंगे।कम से कम गंगा में कचड़ा नहीं डालेंगे और लोगों को भी नहीं डालने के लिए जागरुकता के साथ प्रेरित करेंगे। गंगा हमारी संस्कृति के साथ विशेष विरासत भी है, इसका संरक्षण हमारा और आपका नैतिक जिम्मेदारी तथा कर्त्तव्य है।

गंगा जल अमृत बन जाएगा

गंगा जल अमृत बन जाएगा
नदियों के जल जब निर्मल होंगे
गंगा जल अमृत बन जाएगा।
जन-जन में जब आस जागेगी
गंदगी न कोई फैलाएगा।।
शवघाट जब अलग बनेंगे
कोई शव नहीं दफनाएगा।
स्नान हेतु लोग आया करेंगे
कर के स्नान चले जाएंगे।।
फिर दूषित न हो पाएगा
सब जल में दीप जलाएंगे।
हर- हर गंगे! नमामि गंगे!सब लोग करेंगे।फिर वह समय, संस्कृति और मौसम आएगा।।

-प्रांजल गुप्ता ८अ

ऋषिकेश के पास विश्वप्रसिद्ध रामझूला का आकर्षक दृश्य। फोटो - इंटरनेट से

विद्वानों तथा बुद्धिजीवियों के विचार

भारतरत्न पं.मदन मोहन मालवीय

भारतीय समाज का विश्वास है कि गंगा जी लोगों को शुद्ध करती हैं और पापों का नाश करती हैं। मुझे आशा है कि इसकी रक्षा के लिए अवश्य कुछ उपाय किया जाएगा। यथा शीघ्र किया जाना भी चाहिए।

पंडित जवाहरलाल नेहरू

यही गंगा मेरे लिए निशानी है प्राचीनता की, यादगार की जो बहती आई है वर्तमान तक और बहती चली जा रही है भविष्य के स्वर्णिम सागर की ओर।उसे मेरा शत-शत प्रणाम और अनेकानेक शुभकामनाएं। गंगा तो भारत की विशेष नदी है।यहजनता का प्रिय है, जिससे लिपटी हुई है भारत की राष्ट्रीय स्मृतियां, उनकी आशाएं, और उसके विजय गान, उसकी विजय और पराजय। गंगा तो प्राचीन सभ्यता का प्रतीक रही है। सदा बदलती, सदा बहती, फिर भी वही गंगा की गंगा।

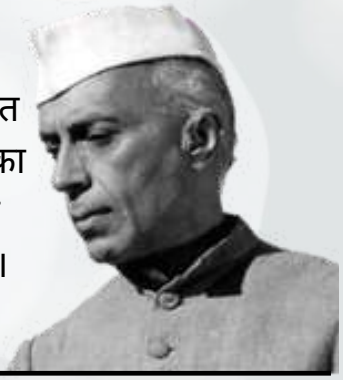

पंडित विद्यानिवास मिश्र

मां का ऋण जैसे नहीं उतरता वैसे ही गंगा का ऋण भी नहीं उतरता। हां इस भाव से हम गंगा के हो सकेंगे और वह होना ही राष्ट्रीय अर्थ में होना है।

डॉ.कमला पाण्डेय - वाराणसी

मां गंगा का संकट सभ्यता का संकट है। गंगा हमारे हृदय में निरन्तर भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अमृत संदेश प्रवाहित करती रहती है। गंगा संकट में होगी तो जीवन कैसे सुखी रह सकता है ?

श्री सुंदरलाल बहुगुणा

गंगा और हिमालय को यदि छोड़ दें तो भारत में जिन मूल्यों पर हम गर्व करते आए हैं, उनका कुछ भी शेष नहीं रह जाएगा।इन मूल्यों ने हमारे लोक जीवन को समृद्ध बनाया है। हमें हिमालय और गंगा को बचाना ही होगा।

“आइए हम सभी संकल्प लें कि नमामि गंगे! परियोजना को ठीक तरह से क्रियान्वित करने का प्रयास करेंगे और गंगा के कायाकल्प में तन मन धन से जुड़ जाएंगे।”

मुक्ति पथ ज्योति है गंगा

गंगा मेरे तन की कहानी तुम हो
गंगा मेरे मन की रवानी तुम हो।

गंगा मेरे मन की अनुप जिंदगी
गंगा मेरे देश की निशानी तुम हो॥

जगहित जिससे ओ वेश धन्य है
बच जाए पुण्य वह शेष धन्य है।

सारे धर्म जहां एक ही तरह हों
बहे जहां गंगा वह देश धन्य है॥

मुक्ति पथ ज्योति है कहानी नहीं है
दानी है बहुत अभिमानी नहीं है।

स्वर्ग से उतरकर धरती को आयी है
पाप के सदश्य पुण्य सारा हो न जाय

डर लगता है विषैली धरा हो न जाय।
देशवासियों! जरा सा और सोचों तुम

कहीं यह गंगा जल खारा हो न जाय॥
गंगा मेरे तन की कहानी तुम हो
गंगा मेरे मन की रवानी तुम हो।

मर्यादा है इस देश की पहचान है गंगा

मर्यादा है इस देश की पहचान है गंगा
पूजा है धरमदीन है ईमान है गंगा।

इस देश के इतिहास की तहरीर यही है
धर्मावलंबियों की जागीर यही है।
लाखों की रोजी-रोटी की तस्वीर यही है
कितनों के माथ की लिखी तकदीर यही है।

भारत की धरा धाम का सम्मान है गंगा
मर्यादा है इस देश की पहचान है गंगा॥
श्रद्धा यही पूजा यही आराधना यही
संकल्प से जुड़ी पवित्र साधना यही।
इतिहास और भूगोल है विज्ञान भी यही
जो लीन हुए उनके लिए ज्ञान भी यही।

गीता रामायण वेद और पुराण है गंगा
मर्यादा है इस देश की पहचान है गंगा॥
दूषित न करे कोई यह अमृत की धार है
ममता भरी धरती के गले का श्रृंगार है।
आदर्श प्रवाहित है कि पावन विचार है
हर लहर में लिखा पवित्र मां का प्यार है।

अपने में ही सम्पूर्ण हिंदुस्तान है गंगा
मर्यादा है इस देश की पहचान है गंगा॥
श्री हरिराम द्विवेदी.

सामान्य - ज्ञानम्

१.आचार्य पाणिनि कृत प्रसिद्ध ग्रंथ-**अष्टाध्यायी**
२.चाणक्य कृत प्रसिद्ध ग्रंथ-**अर्थशास्त्र**
३.पंचतंत्र के रचनाकार-**आचार्य श्री विष्णु शर्मा**
४.हितोपदेश के रचनाकार-**श्री नारायण पंडित**
५.अज्ञातवास में द्रौपदी का नाम-**सैरन्ध्री**
६.विश्व के सर्वश्रेष्ठ गणित शास्त्र के वैज्ञानिक-**भास्कराचार्य**
७.विश्व के सर्वश्रेष्ठ गणित शास्त्र के वैज्ञानिक-**भास्कराचार्य**
८.मीमांसक मण्डन मिश्र की पत्नी का नाम-**भारती**
९.वाचस्पति मिश्र की पत्नी का नाम-**भामती**
१०.याज्ञवल्क्य की पत्नी का नाम-**मैत्रेयी**
११.नाट्यशास्त्र के अनुसार रसों की संख्या-**८**
१२.महाभारत के अन्य नाम-**जय/भारत/ शतसाहस्री**
१३.शंकराचार्य का जन्म स्थान-**कालडी (केरल)**
१४.रामायण में श्लोकों की संख्या-**२४०००**
१५.महाभारत में श्लोकों की संख्या-**१००००००**
१६.श्रीमद्भगवद्गीता में श्लोकों की संख्या-**७००**
१७.श्रीमद्भागवत् महापुराण में श्लोकों की संख्या-**१८०००**
१८.स्वामिनारायण सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रंथ-**शिक्षापत्री**

डॉ.अनन्तमणि त्रिवेदी, "सम्पादक का स्वाध्याय"

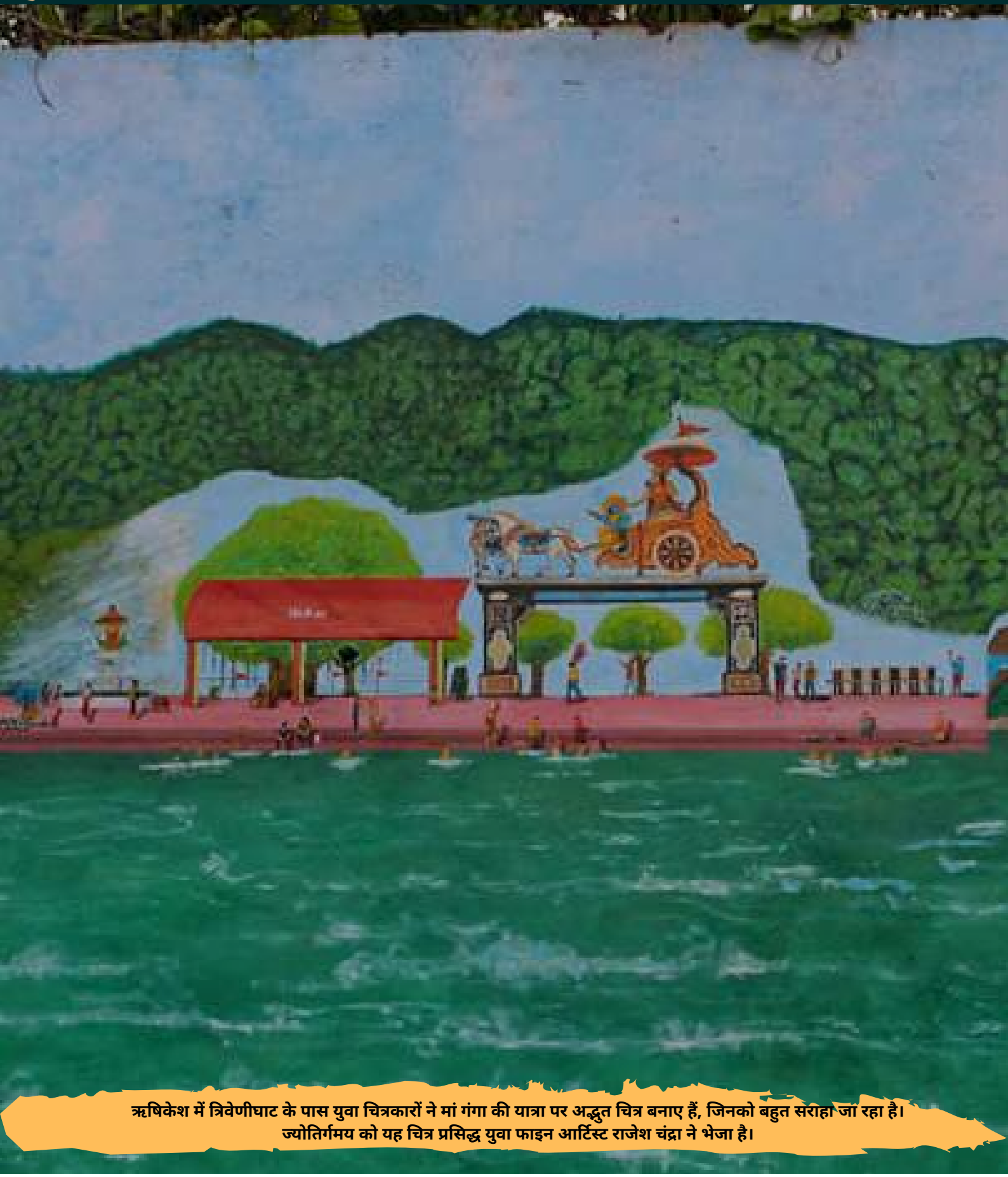

ऋषिकेश में त्रिवेणीघाट के पास युवा चित्रकारों ने मां गंगा की यात्रा पर अद्भुत चित्र बनाए हैं, जिनको बहुत सराहा जा रहा है।
ज्योतिर्गमय को यह चित्र प्रसिद्ध युवा फाइन आर्टिस्ट राजेश चंद्रा ने भेजा है।

आत्मानं विद्धि

Manava Bharati India International School
D- Block, Nehru Colony, Dehradun 248001 Uttarakhand
E-mail.com:- hr@mbs.ac.in, Website:- www.mbs.ac.in
Phone- 0135-2669306, 8171465265

मानव भारती स्कूल देहरादून के लिए प्रसारित। केवल निजी प्रसार के लिए।

संपादक - डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी , डिजाइन- विशाल लोधा